पुनरावृत्ति-या स्मरण दिलाने वाला? (25:1-12)

अध्याय 25 को पहली बार पढ़ने पर, जम्हाई लेने का मन करता है। पौलुस का मुकदमा, एक निर्बल राज्यपाल, एक प्रतिशोधी सभा, एक क्रूर षड्यन्त्र को हम पहले ही देख चुके हैं। आपका तो पता नहीं, परन्तु मुझे री रन[1] (अर्थात पुन: प्रसारण) अच्छा नहीं लगता। कई लोगों को बार-बार पुस्तकें पढ़ना, एक ही फिल्म या टेलीविज़न के कार्यक्रम बार-बार देखना अच्छा लगता है, परन्तु मुझे नहीं।[2] मैं किसी बात को दोबारा तभी पढ़ता या देखता हूं, जब तक मुझे न लगे कि वह बात मुझे भूल गई है या पहली बार मेरा उस पर ध्यान नहीं गया। अध्याय 25 कुछ ऐसा ही है। यह लगने पर भी कि ''उसी पुरानी कहानी'' को आधार बनाया गया है, खोजते रहें तो आपको नये विचार और नई सच्चाइयां मिलेंगी।

केवल पुनरावृत्ति? (25:1-9)

वही खिलाड़ी (आयतें 1, 2)

यह कहानी भी अध्याय 24 की तरह ही आरम्भ होती है। भाग लेने वाले मुख्य लोगों में से एक अलग व्यक्ति है परन्तु वह तो एक रोमी राज्यपाल है। अध्याय 24 की अन्तिम आयत में लिखा था कि ''पुरकियुस फेस्तुस फेलिक्स की जगह पर आया'' (24:27ख)। अब इस अध्याय का आरम्भ, ''फेस्तुस उस प्रान्त में पहुंचकर ...'' (25:1क) से होता है।

फेस्तुस के बारे में हम अधिक नहीं जानते। स्पष्टतया वह रोम के किसी कुलीन घराने में से ही था। इतिहासकार जोसेफ़स ने उसे बुद्धिमान, न्यायप्रिय और बात मानने वाला बताया। हम इस बात पर सहमत हो सकते हैं कि वह अपने पहले या बाद के अधिकारियों से अधिक निष्पक्ष और नम्र था।[3] जोसेफ़स ने यह भी कहा कि उसने यहूदिया के प्रांत को लुटेरों तथा हत्यारों से मुक्त करवाने के लिए काफी काम किया। दुर्भाग्यवश, पदासीन होने के केवल दो वर्ष बाद ही उसका देहांत हो गया। फेलिक्स और फेस्तुस किसी भी रीति से एक जैसे नहीं थे; परन्तु जैसा कि हम देखेंगे कि फलस्तीन में रोमी राज्यपाल होने के कारण, दोनों ही यहूदियों को खुश रखना चाहते थे।

आरम्भ में, अच्छा राज्यपाल बनने के फेस्तुस के दृढ़ संकल्प से हम प्रभावित होते हैं। देश में आने के तीन दिन बाद ही, वह ''कैसरिया से यरूशलेम को गया'' (आयत 1ख)। फेस्तुस के यरूशलेम में यहूदी अगुओं से तुरन्त मिलने के बहुत से कारण थे (देखिए आयत 13)। ताकि वह उन्हें;[4] और वे उसे जान लें। वह यह भी चाहता था कि उनकी सबसे बड़ी दिलचस्पियों का पता लगाकर उन्हें आश्वासन दें कि वह उनका ध्यान रखेगा। सबसे अधिक महत्वपूर्ण, बड़ी चुनौती का सामना करने अर्थात यहूदिया में राजनीतिक और सामाजिक गड़बड़ी दूर करने के लिए उसे उनका सहयोग चाहिए था।

यरूशलेम पहुंचने पर फेस्तुस से अभिनेताओं के एक दल अर्थात ''महायाजकों[5] ने, और यहूदियों के बड़े लोगों ने'' (आयत 2क) भेंट की जिसे हम प्रेरितों के काम में अक्सर मंच पर या यूं कहें कि महासभा में देखते रहे हैं। पिछले मुकदमे के दो वर्ष बाद सभा का प्रधान बदल चुका था। हनन्याह[6] के स्थान पर (23:2; 24:1), अब इश्माइल महायाजक था।[7] परन्तु, इश्माइल भी उसी थान से काटा गया था जिससे हनन्याह; अर्थात वह भी निर्दयी और स्वार्थी था।

यहूदी अगुओं के साथ राज्य के मसलों पर चर्चा करने के लिए बैठते समय फेस्तुस उम्मीद कर रहा होगा कि गिर रही आर्थिकता, अपराध की बढ़ती दर शायद जिसे वे रोमी अन्याय मानते थे, पर बात होगी। इसके विपरीत, वह हैरान रह गया कि उनके एजेंडे में शीर्ष स्थान तम्बू बनाने वाले उस बूढ़े के उस अनसुलझे मुकदमे को मिला जिसे फेलिक्स कैसरिया की जेल में सड़ने के लिए छोड़ गया था (24:27)! ''तब महायाजकों ने, और यहूदियों के बड़े लोगों ने, उसके साम्हने पौलुस की नालिश की'' (25:2)।

राज्यपाल ने पूरे घटनाक्रम के बाद अपनी रिपोर्ट में कहा: ''जब मैं यरूशलेम में था, तो महायाजक और यहूदियों के पुरनियों ने उस [पौलुस] की नालिश की; और चाहा, कि उस पर दण्ड की आज्ञा[8] दी जाए'' (आयत 15)।[9] उसने कहा कि ''यहूदियों ने ... चिल्ला चिल्लाकर ... बिनती की, कि इसका जीवित रहना उचित नहीं'' (आयत 24)। शायद उन्होंने उसे पौलुस को उनके हवाले करने को कहा था।[10] मैं उन्हें फेस्तुस से यह कहते हुए सुन सकता हूं, ''फेस्तुस को चाहिए था कि उस उपद्रवी को हमारे हाथों में छोड़ देता, परन्तु उस मक्कार राजनयिक को न्याय तो करना आता ही नहीं था!''

वे बिना मुकदमे के ही उसे फेस्तुस से दोषी घोषित करवाना चाहते थे, परन्तु उसने ''उनको उत्तर दिया, कि रोमियों की यह रीति नहीं, कि किसी मनुष्य को दण्ड के लिए सौंप दें, जब तक मुद्दाअलैह को अपने मुद्दइयों के आमने-सामने खड़े होकर दोष के उत्तर का अवसर न मिले'' (आयत 16)। रोमी कानून के अनुसार किसी कैदी को मुकदमे की सुनवाई का अधिकार था चाहे उसने कितना भी भयंकर अपराध क्यों न किया हो!

वही षड्यन्त्र (आयतें 2-5)

सभा के सदस्य एक रोमी राज्यपाल को न्याय के अनुसार काम करता देखकर हैरान थे। परन्तु, उनके पास दूसरी योजना भी तैयार थी। राज्यपाल यरूशलेम में मुकदमे के लिए

तैयार हो जाता तो वे मान जाते। उन्होंने ''उससे बिनती करके [पौलुस के] विरोध में यह वर चाहा, कि वह उसे यरूशलेम में बुलवाए'' (आयत 3)। यह एक युक्तिसंगत बिनती लगती थी। राज्यपाल कैसरिया या यरूशलेम में कहीं भी कचहरी लगा सकता था (देखिए यूहन्ना 19:13), इसलिए यरूशलेम में लगाने में क्या बुराई है?

''वर'' शब्द पर ध्यान दें। यूनानी शब्द के अनुवाद ''वर'' को बहुत से अनुवादों में ''favor'' लिखा गया है।[11] किस्टमेकर ने संकेत दिया कि ''एक वचन में *Favor* शब्द से *quid pro quo* (कुछ देकर कुछ लेना) अदला बदली का पता चलता है।'' यहूदियों ने राज्यपाल को यह अन्तिम चेतावनी दे दी: ''यदि तुम चाहते हो कि हम तुम्हारी सहायता करें, तो पहले तुम हमारी सहायता करो। पौलुस को हमें दे दो!''[12]

देखने में तो, यहूदी लोग न्याय के लिए बिनती कर रहे थे। भीतर ही भीतर वे अन्याय का षड्यन्त्र रच रहे थे, ''क्योंकि वे उसे रास्ते में ही मार डालने की घात लगाए हुए थे'' (आयत 3ख)। एक और री रन (अर्थात पुन:प्रसारण)! दो साल पहले महासभा के अगुओं ने, चुपके से इस प्रेरित के अंगरक्षक को मनाकर इसकी हत्या करने की अपने साथी षड्यन्त्रकारियों के साथ योजना बनाकर, रोमी सेनापति से पौलुस को उनके पास लाने को कहा था (23:12-15)। इस बार, सशस्त्र लोगों ने[13] पौलुस और उसके रक्षक दल[14] के यरूशलेम के निकट पहुंचने पर उन पर घात लगाने के लिए यहूदिया के पहाड़ी क्षेत्र में छिपना था।

समय मन की कड़वाहट को तभी कम कर सकता है, यदि मन का स्वामी अपने क्रोध को त्याग दे (देखिए इफिसियों 4:31)। यहूदी अगुओं ने अपनी घृणा की अग्नि को लगातार जलाए रखा था, और यह अब पहले से भी अधिक तेज़ हो गई थी (इब्रानियों 12:15)![15]

हो सकता है कि फेस्तुस यहूदियों द्वारा रचे गए हत्या के षड्यन्त्र से अवगत न हो,[16] परन्तु इसे देखकर उसे शक्ति के इस खेल का पता चल गया।[17]

> फेस्तुस ने उत्तर दिया, कि पौलुस कैसरिया में पहरे में है, और मैं आप जल्द वहां जाऊंगा। फिर कहा, तुम में जो अधिकार रखते हैं, वे साथ चलें, और यदि इस मनुष्य ने कुछ अनुचित काम किया है, तो उस पर दोष लगाएं (आयतें 4, 5)।

फेस्तुस कह रहा था, ''तुम्हें वर देने के लिए, मैं इस केस को फिर से खोलूंगा, परन्तु यह मत भूलना कि मैं राज्यपाल हूं। तुम मेरी योजनाओं के अनुसार चलोगे, मैं तुम्हारी योजनाओं के अनुसार नहीं!''

एक बार फिर परमेश्वर का पूर्वप्रबन्ध दिखाई दिया (नीतिवचन 21:1), क्योंकि यदि राज्यपाल पौलुस को यरूशलेम लाने के लिए मान जाता, तो इस प्रेरित की जान ले ली जाती। जैसे जॉन वैस्ले ने टिप्पणी की, ''परमेश्वर किन अदृश्य स्रोतों से संसार को चलाता

है! राजा के अधिकारों को बनाए रखने की फेस्तुस की दिलचस्पी पौलुस को जीवित रखने का साधन बन गई।''[18]

वही दोष (आयतें 6, 7)

फेस्तुस की पेशकश को यहूदी अगुओं द्वारा न चाहते हुए भी मान लेने के बाद, राज्यपाल ने जल्दी से यरूशलेम की अपनी यात्रा को खत्म कर दिया। फिर वह यहूदी अगुओं को साथ लेकर (आयत 5) ''उनके बीच कोई आठ-दस दिन रहकर कैसरिया गया'' (आयत 6क)।

यहूदियों के साथ अपने सहयोग की इच्छा प्रकट करने के लिए, फेस्तुस ने अपनी नियोजित भेंटों और महत्वपूर्ण घटनाओं की सूची उन्हें दे दी ''और दूसरे दिन न्याय आसन पर ...'' बैठा (आयत 6ख)।[19] उसने इस मामले को निपुणता और निर्णायक ढंग से निपटाने की ठान ली। बाद में उसने घोषणा की, ''सो जब [यहूदी] यहां इकट्ठे हुए, तो मैंने कुछ देर न की, परन्तु दूसरे ही दिन न्याय आसन पर बैठकर, उस मनुष्य को लाने की आज्ञा दी'' (आयत 17)।

जब सिपाही पौलुस को लेने आए थे, तो वह हैरान ही नहीं, बल्कि स्तब्ध रह गया होगा। पहले ही उस पर पूर्व राज्यपाल के सामने मुकदमा चला था और वह निर्दोष पाया गया था (24:26)। उसका एक और मुकदमा पुन: प्रसारण की तरह था जिसकी उसे ज़रूरत नहीं थी!

पौलुस के पेश होने पर, फेस्तुस ने यहूदी अगुओं को अपना पक्ष प्रस्तुत करने की आज्ञा दी। इस बार उनका प्रतिनिधित्व करने वाला कोई प्रियभाषी वकील नहीं था।[20] बल्कि, उन सबने ''[पौलुस के] आस-पास खड़े होकर उस पर बहुतेरे भारी दोष लगाए'' (25:7क)। न्यायाधीश फेस्तुस के लिए वे आरोप नये होंगे, परन्तु वे अध्याय 21 और 24 वाली वही घिसी-पिटी शिकायतें थीं[21] जिन्हें राजनीतिक ढंग से तोड़-मरोड़ कर थोड़ा बहुत बदला गया था।[22] फिर भी, जिरह में उन्होंने ऐसे आरोप लगाए ''जिन का प्रमाण वे नहीं दे सकते थे'' (25:7ख; देखिए 24:13)।

मुझे यह दृश्य उलझन भरा ही नहीं बल्कि गड़बड़ भरा भी दिखाई देता है। मुकदमा करने वालों को अपना केस प्रस्तुत करने तक अपनी जगह पर बैठे रहना होता था (आयत 18)। उनके लिए सही ढंग यह था कि वे बारी-बारी से बोलते। इसके बजाय, यरूशलेम से सभी अगुओं ने अपना गुस्सा उस पर डालते हुए उसे घेर लिया (आयत 7)। उसी समय, श्रोताओं में से कैसरिया के स्थानीय यहूदी पुकार रहे थे कि पौलुस ''का जीवित रहना उचित नहीं'' (आयत 24)।

इस मूर्च्छाग्रस्त आवेग से यहूदी क्या पाने की उम्मीद कर सकते थे? यह जानकर कि वे कभी भी अपने भ्रामक और काल्पनिक आरोपों से पौलुस पर अभियोग नहीं चला सकते, उन्हें यही उम्मीद थी कि इससे वे नये राज्यपाल को धमका सकेंगे जिसकी दिलचस्पी देश में व्यवस्था बनाए रखने में थी।

वही सफ़ाई (आयत 8)

अब, फेस्तुस अवश्य ही फेलिक्स को यह केस बिना सुलझाये छोड़ जाने के लिए कोस रहा होगा! यहूदी लोगों में रोमी न्याय देना इतना आसान नहीं था जितना उसे लगा था!

सबको चुप करा कर, राज्यपाल ने पौलुस को बोलने की अनुमति दी। लूका ने पौलुस के उत्तर को कुछ ही शब्दों में संक्षिप्त किया है: ''मैंने न तो यहूदियों की व्यवस्था का और न मन्दिर का, और न कैसर का कुछ अपराध किया है'' (आयत 8ख)।[23] स्पष्टतः, सभा ने पौलुस पर फिर पाप, धर्मविरोध और राजद्रोह का आरोप लगाया। पाप–''यहूदियों की व्यवस्था'' को तोड़ने; धर्मविरोधता–''मन्दिर'' को अशुद्ध करने और राजद्रोह–रोम के लिए मुश्किल खड़ी करने को कहा गया था।

परन्तु, तीसरे आरोप के साथ, एक नया शब्द अर्थात ''कैसर'' जोड़ दिया गया था। यह राजसी नाम यहूदिया में पौलुस के मुकदमे के समय कहीं नहीं आया था और आयत 8 में इसका आना कोई संयोग ही नहीं है। लूका के शब्दों में रोमी सम्राट का चित्रण इस पाठ में नौ बार हुआ है जिसमें छह बार ''कैसर''[24] के रूप में (आयतें 8, 10, 11, 12, 21), दो बार ''महाराजाधिराज''[25] के रूप में (आयतें 21, 25) और एक बार ''स्वामी''[26] के रूप में (आयत 26) है। फोकस अब फलस्तीन से रोम, अधीनस्थों से सर्वोच्च व्यक्ति तक जा रहा था (देखिए 27:24)!

इन तीन आरोपों का ''दोषी'' होने की सफाई देकर, पौलुस ने दृढ़तापूर्वक यह ऐलान करते हुए कि यीशु जीवित है (25:19) पुनरुत्थान में विश्वास करने का ''दोषी'' होने की फिर बिनती की (देखिए 24:20, 21)!

वही राजनीति (आयत 9)

पौलुस की बातों से, फेस्तुस घबरा गया और उलझन में पड़ गया (आयत 20)। फेस्तुस को फेलिक्स की तरह ''इस पंथ की बातें ठीक-ठीक'' मालूम नहीं थीं (24:22क)। जैसे बाद में उसने विस्तारपूर्वक वर्णन किया, कि उसे दोनों ही पक्ष मूर्ख लगते थे:

> जब उसके मुद्दई खड़े हुए, तो उन्होंने ऐसी बुरी बातों का दोष नहीं लगाया, जैसा मैं समझता था। परन्तु अपने मत के, और यीशु नामक किसी मनुष्य के विषय में जो मर गया था, और पौलुस उस को जीवित बताता था, विवाद करते थे (25:18, 19)।

राज्यपाल के लिए दो तथ्य शीशे की तरह साफ थे: पहला, यह एक धार्मिक मुद्दा था, राजनीतिक नहीं। (जब गल्लियो इस निष्कर्ष पर पहुंचा था तो उसने केस को न्यायालय से निकलवा दिया था [18:14-16] और फेस्तुस को भी ऐसा ही करना चाहिए था।) दूसरा, पौलुस ने कोई अपराध नहीं किया था। (राज्यपाल ने बाद में माना, कि ''उसने

ऐसा कुछ नहीं किया कि मार डाला जाए'' [25:25क]।) इन दो तथ्यों से मामला सुलझ जाना चाहिए था। फेस्तुस को अपने न्यायासन से यह घोषणा कर देनी चाहिए थी, ''मैं प्रतिवादी को 'दोषी नहीं' पाता'' परन्तु उसने यह घोषणा नहीं की।

राज्यपाल कुख्यात चट्टान और कठोर भूमि के बीच फंसा हुआ था क्योंकि रोम के भय से उसने न पौलुस को दोषी बताने का साहस किया,[27] और न ही निर्दोष। अपने नये पद पर आसीन होने के दो सप्ताह से भी कम समय में ही उसके उच्च आदर्श चकनाचूर हो गए थे। अपने से पहले और बाद के राजनीतिज्ञों की तरह, उसने भी अन्त में राजनीतिक लाभ की चिन्ता की।

उन निर्दयी यहूदी अगुओं से, जो उसके प्रबन्ध को बना भी सकते थे और बिगाड़ भी, घिरे हुए फेस्तुस ने अपने विकल्पों पर विचार किया। उसके मन में आने वाले विचारों की कल्पना करना कठिन नहीं है: ''इस झगड़े का मुख्य कारण एक यहूदी धार्मिक प्रश्न है, सो उसे सुलझाने का सबसे अच्छा स्थान यहूदी धर्म का केन्द्र, यरूशलेम ही होगा। इससे सभा के सदस्य प्रसन्न हो जाएंगे, और मुझे उनका साथ चाहिए। दूसरी ओर, इस बात से कैदी उत्तेजित हो जाएगा। सो उसे मैं आश्वस्त कर दूंगा कि मैं सब सम्भाल लूंगा।''

फेस्तुस पौलुस की ओर मुड़ा: ''क्या तू चाहता है, कि यरूशलेम को जाए; और वहां मेरे साम्हने तेरा यह मुकदमा तय किया जाए?'' (आयत 9ख)। ''*मेरे* साम्हने'' शब्दों से ऐसा लग सकता है कि वह पौलुस के पक्ष में हो, परन्तु समझौते के प्रस्ताव से उसे लाभ नहीं हो सकता था। यह प्रस्ताव अवैधानिक, युक्ति शून्य और बुरी नीयत से था: यह अवैधानिक इसलिए था क्योंकि पौलुस दो बार निर्दोष ठहराया जा चुका था।[28] यह युक्ति शून्य इसलिए थी क्योंकि यदि पिछले दो मुकदमों में कोई निर्णय नहीं लिया गया था, तो तीसरे मुकदमे में कोई अलग निर्णय कैसे हो सकता था? अन्त में, पौलुस के दृष्टिकोण से, यह योजना जानबूझ कर बुरी नीयत से बनाई गई थी। यदि फेलिक्स मुट्ठीभर यहूदियों से डर सकता था, तो पौलुस की मृत्यु की मांग करने वाले हज़ारों यहूदियों से तो उसने और भी डर ही जाना था। फिर, कौन जाने यहूदियों के मन में और क्या शैतानी बात आ जाती? पौलुस ने उनकी चालों से इतना कष्ट झेला था (9:24; 20:3; 23:14) कि उसे अब उन पर भरोसा नहीं रहा था।

लूका ने लिखा कि फेस्तुस ने यह प्रस्ताव इसलिए रखा क्योंकि उसकी ''*यहूदियों को* खुश करने की इच्छा'' थी (आयत 9क)। हमें एक और पुन:प्रसारण मिलता है अर्थात, एक बार फिर एक कमज़ोर नौकरशाह ने पौलुस को एक राजनीतिक प्यादे के रूप में इस्तेमाल करने का निर्णय लिया।

इस तथ्य से भ्रमित न हों कि फेस्तुस ने पौलुस से *पूछा* कि क्या वह ''*चाहता है* कि यरूशलेम को जाए'' (आयत 9ख)। ''किसी राज्यपाल का पूछताछ करना उसके निर्णय लेने के तुल्य [था]।''[29] राज्यपाल पौलुस को अपनी पसन्द चुनने का विकल्प नहीं दे रहा था। वह तो इस प्रेरित को बता रहा था कि वह यरूशलेम में जाने वाला *था*।[30]

नहीं-स्मरण दिलाने वाला! (25:10-12)

यहां, हमारी कहानी एक नया मोड़ ले लेती है। पुन:प्रसारण के बजाय, यह एक स्मरण दिलाने वाला और पुन: आश्वासन बन जाता है कि परमेश्वर हमेशा ''निकास का मार्ग'' उपलब्ध करवाता है (1 कुरिन्थियों 10:13)।

परमेश्वर ने पौलुस की रक्षा की

जान तराजू में लटकी होने पर भी फलस्तीन के सबसे शक्तिशाली आदमी के सामने खड़े पौलुस (देखिए यूहन्ना 19:10) ने कहा, ''नहीं'':

> पौलुस ने कहा; मैं कैसर के न्याय आसन के साम्हने खड़ा हूं: मेरे मुकदमे का यहीं फैसला होना चाहिए: जैसा तू अच्छी तरह जानता है, यहूदियों का मैंने कुछ अपराध नहीं किया। यदि अपराधी हूं और मार डाले जाने योग्य कोई काम किया है; तो मरने से नहीं मुकरता; परन्तु जिन बातों का मुझ पर ये दोष लगाते हैं, यदि उन में से कोई बात सच न ठहरे, तो कोई मुझे उन के हाथ नहीं सौंप सकता: मैं कैसर की दुहाई देता हूं (आयतें 10, 11)।

शास्त्र का हमारा यह अंश रोमी राज्यपाल और रोमी नागरिक के बीच शक्ति संघर्ष की बात बताता है और यह कि परमेश्वर की सहायता से नागरिक प्रबल हुआ। द लिविंग बाइबल में पौलुस के शब्दों का भावानुवाद इस प्रकार किया गया है:

> नहीं! मुझे सम्राट के सामने अपनी सुनवाई का विशेषाधिकार चाहिए। तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं दोषी नहीं हूं। यदि मैंने मृत्यु दण्ड के योग्य कोई काम किया है, तो मैं मरने से इन्कार नहीं करता! परन्तु मैं निर्दोष हूं, न तो तुम्हें और न किसी और को अधिकार है कि मुझे मरने के लिए इन लोगों के हाथ सौंप दे। *मैं कैसर को अपील करता हूं।*

एक रोमी नागरिक को अधिकार था कि यदि उसे लगे कि मुकदमे में उसे न्याय नहीं मिल रहा है तो वह कैसर को अपील कर सकता था। इस अधिकार के लिए कुछ अपवाद थे (जैसे कि हत्या के मामलों में शामिल होना या रंगे हाथों चोरी करते पकड़े जाना), परन्तु यह रोमी नागरिकता के मौलिक अधिकारों में से एक था।[31] नागरिक के, ''*कैसरम अपेल्लो*''[32] कहने पर मामला तुरन्त न्यायाधीश के हाथों से निकल जाता था।

पौलुस के अपील करने के समय कैसर नीरो था, जो 54 ई. में सिंहासन पर बैठा था। नीरो के क्रूर इतिहास को जानते हुए, हमें यह अजीब लग सकता है कि पौलुस उसके हाथों में अपना जीवन देने को तैयार कैसे हो गया। परन्तु, याद रखें, कि नीरो के शासन के आरम्भिक पांच वर्षों (जब वह सिनेका[33] और अन्यों के प्रभाव में था) को रोमी लोग

''स्वर्ण युग'' मानते थे। ''59 ई. में थोड़ी सी हलचल हुई जिससे 64 और 65 ई. की घटनाओं की चेतावनी मिल गई।''[34]

यकीनन ही फेस्तुस हैरान रह गया था। प्रत्येक रोमी नागरिक को रोम में अपील करने का अधिकार तो था, परन्तु झंझट और असुविधा के भय से इसका लाभ बहुत कम लोग उठाते थे। सशस्त्र अंगरक्षकों से घिरे राजधानी नगर में प्रवेश करने की इच्छा कोई नहीं रखता था। फिर, आम आदमी आने जाने में लगने वाले समय के अलावा लिस्ट में अपने केस की प्रतीक्षा के लिए रोम में ठहरना नहीं चाहता था (देखिए 28:30)।

परेशान फेस्तुस ने यह देखने के लिए कि उसे क्या करना चाहिए ''मन्त्रियों की सभा के साथ बातें ...''[35] कीं (25:12ख)। उन्होंने अवश्य ही उसे बताया होगा कि पौलुस के पास सचमुच ही अधिकार है और यह कि, रोम के प्रतिनिधि के रूप में राज्यपाल के पास और कोई विकल्प नहीं है। गुस्से से लाल, फेस्तुस ने न्यायासन पर जाकर वही पुराना फॉर्मूला बता दिया: *कैसरम अपेलिस्टी; एड कैसरम आइबिस* अर्थात ''तू ने कैसर की दुहाई दी है, तू कैसर के पास जाएगा'' (आयत 12ख)।

ये शब्द कहते हुए, फेस्तुस ने भावनाएं मिला दी होंगी। उसे सम्भवत: एक ''नगण्य व्यक्ति'' से मिलने वाली अप्रत्याशित पराजय चुभ रही थी। वह निश्चय ही परेशान होगा कि मामले को कैसे निपटाए जिससे उसके प्रबन्ध पर कोई प्रभाव न पड़े। उसने सम्भवत: राहत भी महसूस की होगी जब शीघ्र ही यह कष्टदायक व्यक्ति और केस उसकी जिम्मेदारी से बाहर होने थे!

राज्यपाल ने ''आज्ञा दी कि जब तक [पौलुस को] कैसर के पास'' भेजने का प्रबन्ध न किया जाए ''उसकी रखवाली की जाए'' (आयत 21)। लम्बे इन्तज़ार के बाद, पौलुस रोम जाने को तैयार था!

पौलुस की अपील पर विचार करते समय, हमारे मन में कई प्रश्न आते हैं: जब पौलुस को कैसर के सामने अपील करने के अपने अधिकार का पता था, तो उसने इस अधिकार का इस्तेमाल पहले क्यों नहीं किया (इस प्रकार कैसरिया की जेल में दो वर्ष क्यों बिता दिए)? अब उसने अपने अधिकार मांगने पर ज़ोर क्यों दिया?

स्पष्टत:, फेस्तुस के यरूशलेम में लौटने की बात तक, पौलुस को लगता था कि रोम जाने के लिए उसके पास एक से अधिक विकल्प हैं। उसके लिए एक द्वार कैसर के सामने अपील करने का खुला था, परन्तु यह सबसे कम प्राथमिकता वाला द्वार था।[36] पौलुस रोम में एक कैदी के रूप में नहीं जाना चाहता था;[37] बल्कि वह एक स्वतन्त्र व्यक्ति के रूप में चलकर जाना चाहता था, जो अपनी इच्छा से कहीं भी स्वतन्त्रतापूर्वक जाकर प्रचार कर सकता हो।[38] फेलिक्स द्वारा उसे बन्दी बनाकर रखने के दो वर्षों के दौरान पौलुस के पास यह विश्वास करने का कारण था कि वह किसी भी समय छूट सकता है। फेलिक्स द्वारा पौलुस को बिना छोड़े देश से चले जाने पर उसके सामने से एक द्वार बन्द हो गया।[39]

फेस्तुस को, जो न तो यहूदियों की चालाकियों के बारे में जानता था और न मसीहियत की महिमा के विषय में राज्यपाल का कार्यभार सौंपे जाने से अन्य द्वार धम से बन्द होने

लगे। अन्त में, राज्यपाल द्वारा पौलुस को सूचित करने के समय कि उसे यरूशलेम में ले जाया जाएगा, कैसर से अपील करने का एक ही द्वार खुला रह गया था। इससे पहले कि यह द्वार भी बन्द हो जाए, पौलुस निकलकर भाग गया।

क्या पौलुस ने कैसर के सामने अपील करके कोई गलती की? आखिर, क्या बाद में राजा अग्रिप्पा ने फेस्तुस से नहीं कहा, ''यदि यह मनुष्य कैसर की दुहाई न देता, तो छूट सकता था'' (26:32ख)? हां, अग्रिप्पा ने यह कहा, परन्तु काफी देर के बाद (25:13, 14)।[40] यदि पौलुस ने अपनी अपील से राज्यपाल की योजनाओं को निष्फल न किया होता, तो लूका कैसरिया में पहुंचकर अग्रिप्पा और बिरनीके के सामने पौलुस के निधन की सूचना पढ़ रहा होता।[41]

एक बार फिर परमेश्वर का पूर्वप्रबन्ध देखा जा सकता है: कैसर के पास अपील करके, पौलुस को राजा अग्रिप्पा के सामने प्रचार करने का अवसर मिल गया था (9:15; 26:1)। कैसर की दुहाई देकर, पौलुस देश से बाहर निकलने तक रोमी सुरक्षा में रहा (देखिए 25:21)। कैसर को अपील करने के बाद पौलुस कैसर के महल में सुसमाचार के प्रभाव को ले जाने के योग्य हुआ (प्रेरितों 9:15; फिलिप्पियों 4:22)। रोम को अपील करके पौलुस को नीरो के सामने प्रचार करने का भी अवसर मिल गया (प्रेरितों 27:24)। यह भी सम्भव है कि परमेश्वर ने ही पौलुस को कैसर के पास अपील करने के लिए ''बाध्य'' किया (28:19), ताकि पौलुस मसीहियत को वैधानिक दर्जा दिलाने के लिए राज दरबार में प्रस्तुत कर सके।

परमेश्वर हमारी रक्षा करता है

इस कहानी में हमारे लिए बहुत से सबक हैं, परन्तु मैं जिस एक सबक पर ज़ोर देना चाहता हूं वह अपने संतों की रक्षा के लिए परमेश्वर का अद्‌भुत पूर्वप्रबन्ध है। पहले, मैंने 1 कुरिन्थियों 10:13 की बात की थी। पूरी आयत इस प्रकार है:

> तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है: और परमेश्वर सच्चा है: वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, बरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको।[42]

इस आयत में पौलुस ने परीक्षाओं और कष्टों की बहुत बात की है: कठिनाइयां हर किसी पर आती हैं; कोई इनसे नहीं बच सकता। मुश्किलें केवल हम पर ही नहीं आतीं, हमसे पहले दूसरे लोगों पर भी ऐसी ही कठिनाइयां आई थीं। बड़ी बात यह है, कि परीक्षा में पड़ जाने पर भी मसीही लोग यह भरोसा रख सकते हैं कि नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में है! अपने अध्ययन में हम बार-बार इसका प्रमाण देख चुके हैं; परमेश्वर द्वारा समय पर पौलुस की सम्भाल से इन्कार नहीं किया जा सकता। हमने ''परमेश्वर को अपने महान

उद्देश्य के लिए विश्वास से उसकी योजनाओं को पूरा करने के योग्य लोगों पर ... जेल की बेड़ियों, लालच, बुरे राजनीतिक उद्देश्यों तथा घृणा का ... प्रयोग करते हुए''[43] देखा है।

1 कुरिन्थियों 10:13 में पौलुस ने परीक्षा के सम्बन्ध में दो प्रतिज्ञाएं कीं: पहली, परमेश्वर परीक्षाओं की अनुमति ही नहीं देता, बल्कि उन्हें सीमित भी करता है:[44] ''परमेश्वर विश्वास योग्य है, जो तुम्हें तुम्हारी सामर्थ से अधिक परीक्षा में नहीं पड़ने देगा।'' परमेश्वर आपकी क्षमताओं तथा निर्बलताओं दोनों को जानता है, और वह ''तुम्हें उससे अधिक परीक्षा में नहीं पड़ने देगा जितना तुम सह सकते हो'' (न्यू सैन्चुरी वर्ज़न)।

क्या आपने कभी किसी मसीही को अपने पाप की क्षमा मांगने की कोशिश में यह कहते हुए सुना है, ''मैं अब और नहीं सह सकता''? ऐसे वाक्य से परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को कम करके दिखाया जाता है! यदि उस व्यक्ति के लिए ''सहना'' *असम्भव* हो गया है, तो परमेश्वर ने उसे उसकी योग्यता से बढ़कर परीक्षा में पड़ने दिया, और परमेश्वर विश्वास योग्य नहीं है! सच्चाई यह है, यदि हम ''सहते नहीं'', तो यह इसलिए नहीं कि हम ''सहना'' नहीं *चाहते,* न ही इसलिए कि हम ''सह'' सकते हैं! पौलुस को हमसे अधिक कष्ट सहने पड़े थे, परन्तु उसने कभी शिकायत नहीं की, कि ''प्रभु, तूने मुझे मेरी सामर्थ से अधिक कष्ट दिया है!''

दूसरी प्रतिज्ञा अध्याय 25 में स्पष्ट तौर पर दिखाई गई है: परमेश्वर न केवल हमारी समस्याओं को सीमित करता है बल्कि वह उन पर विजयी होने के लिए हमें साधन भी उपलब्ध करवाता है: ''बरन परीक्षा के साथ [वह] निकास भी करेगा; कि तुम सह सको।'' मूल भाषा यूनानी में ''निकास'' शब्द को पहली सदी के सिपाहियों द्वारा (स्पष्ट पराजय से) घिरे होने के लिए इस्तेमाल किया जाता था, जब अचानक शत्रु की कतारों में खाली जगह बन जाती और वे बचकर निकल पाते!

''निकास'' तीन बातों पर निर्भर करता है। पहली यह कि कष्ट कैसा है। निकास के साधन का सम्बन्ध कष्ट पर निर्भर करता है। यरूशलेम में पौलुस के लिए हत्या के षड्यन्त्र से ''निकास का मार्ग'' ईमानदार रोमी कमांडर को उस षड्यन्त्र की जानकारी देना था। पौलुस को यरूशलेम वापस भेजने से उसके ''निकास का मार्ग'' कैसर के पास अपील करना था। दूसरा, परमेश्वर कष्ट उठाने वालों की योग्यताओं को जानता है। वह हमारी शक्ति के अनुसार समस्याओं और समाधानों को जोड़ता है।[45] ''निकास'' का पौलुस वाला मार्ग मेरे लिए खुला नहीं होगा; वह एक रोमी नागरिक था, मैं नहीं हूं। तीसरा, पीड़ित व्यक्ति के लिए ''निकास का मार्ग'' परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों पर निर्भर करता है।

हो सकता है कि परेशानी में होने पर हमें परमेश्वर के ''निकास के मार्ग'' का पता ही न चले। अक्सर, वैसा होता नहीं जैसा *हम* चाहते हैं। कैसरिया में, पौलुस के लिए ''निकास का मार्ग'' वह नहीं था जो वह चाहता था क्योंकि वह तो रोम में कैदी के रूप में नहीं बल्कि एक स्वतन्त्र व्यक्ति के रूप में जाना चाहता था। फिर भी, कैसर के सामने उसकी अपील *परमेश्वर* द्वारा उसके लिए ठहराया ''निकास का मार्ग'' था, चाहे यह पौलुस की पहली पसन्द थी या नहीं। इसी प्रकार, परीक्षा में पड़ने पर हमारी प्राथमिकता होगी कि ''निकास'' का परमेश्वर का ढंग हमें इस परीक्षा से निकाल दे। परन्तु, हो सकता है कि परमेश्वर उन परीक्षाओं को हमें और अच्छे लोग बनाने के लिए हम से दूर न करे (याकूब

1:2-4)। ऐसी हालत में, अपनी समस्याओं से सीखने और शक्ति अर्जित करने के लिए परमेश्वर पर और निर्भर रहना ''निकास'' का उसका मार्ग होगा![46]

अपने मन में दो सच्चाइयों को बिठा लें; फिर आप कष्ट आने के समय तैयार होंगे: (1) निकास का मार्ग तो सदा उपलब्ध रहता है हमें केवल उसे ढूंढ़ना है। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि वह निकास का मार्ग उपलब्ध करवाएगा! उसने पौलुस को सम्भाला; वह हमें भी सम्भालेगा! (2) विजय तो मिलेगी, हमें केवल इसका दावा करना है। परमेश्वर हमें खुले निकास से जाने के लिए मजबूर नहीं करता। यह हम पर निर्भर करता है कि हम इसका लाभ कैसे उठाते हैं। यदि हम परमेश्वर की इच्छा के आगे अपने आपको समर्पित करके उसे अपने जीवन में काम करने की अनुमति दें, तो परीक्षाएं हम से कभी भी कुछ छीन नहीं पाएंगी!

सारांश

आइए फेलिक्स और फेस्तुस की कहानियों में अन्तिम अन्तर देखें। पौलुस के फेलिक्स के सामने प्रचार करने पर वह ''भयमान हुआ'' और कांपा (24:25)। जब उसने फेस्तुस के सामने प्रचार किया, तो यह राज्यपाल ''उलझन में था'' (25:20) और उसे लगा कि यह सारा मामला ही ''व्यर्थ'' है (25:27)। बाद में उसने कहा, ''हे पौलुस, तू पागल है! बहुत विद्या ने तुझे पागल कर दिया है'' (26:24ख)।

फेलिक्स की कहानी एक ऐसे आदमी का दुखांत दिखाती है जिसका मन ऐसा है जिसे परमेश्वर की ओर मुड़ने की इच्छाशक्ति के बिना स्पर्श किया जा सकता है। फेस्तुस की कहानी एक ऐसे मन का दुखांत दिखाती है जिसे कभी स्पर्श नहीं किया जा सकता। अन्याय, अज्ञानता और उदासीनता वाले मन को सुसमाचार का प्रचार एक पागल आदमी का ज़ोर-ज़ोर से उपदेश करना लगता है (इफिसियों 4:19; इब्रानियों 3:13; 1 कुरिन्थियों 2:14)।

मेरी प्रार्थना है कि आप फेलिक्स या फेस्तुस के जैसे न बनें। क्या आपका हृदय अभी भी कोमल है? यह अहसास हो जाने पर कि आपको परमेश्वर के आगे समर्पण करने की आवश्यकता है, क्या आप बिना हिचकिचाए उसे स्वीकार कर लेंगे? अनन्तकाल का आपका निवास इस पर निर्भर है कि आप अब क्या फैसला लेते हैं।

प्रवचन नोट्स

आप अध्याय 25 पर एक ही प्रवचन में प्रचार करना चाहते हैं, तो *वियर्सबे'ज़ एक्सपोज़िटरी आउटलाइंज़ ऑन द न्यू टैस्टामेंट*[47] में तीन मुख्य सुझाव हैं: (1) पौलुस कैसर को अपील करता है (आयतें 1-12); (2)पौलुस फेस्तुस को उलझा देता है (आयतें 13-22); (3) पौलुस राजा के सामने आता है (आयतें 23-27)।

अध्याय 25 और 26 को आप एक ही प्रवचन में समेटना चाहें, तो ''पॉल द डिफेन्डर'' शीर्षक से वियर्सबे का प्रवचन इन तीन खण्डों में मिलता है: (1) मेल: फेस्तुस से यहूदी अगुओं का (25:1-12); (2) परामर्श: फेस्तुस और अग्रिप्पा को (25:13-27); (3) सामना: फेस्तुस, अग्रिप्पा और पौलुस का (26:1-32)।[48]

पाद टिप्पणियां

[1]टेलीविज़न पर पुन: प्रसारित किए जाने वाले कार्यक्रमों को अमेरिका में ''री रन'' कहा जाता है। इस शब्द को दोहराई जाने वाली अन्य बातों पर भी लागू किया जा सकता (और जाता) है। [2]इसका स्पष्ट अपवाद बाइबल है, जिसे समझने और पूरी तरह उसके महत्व को जानने के लिए हमें बार-बार पढ़ना चाहिए। [3]उसके बाद अल्बिनुस आया, जो एक दुष्ट व्यक्ति था। यहूदिया में अल्बिनुस के शासन के कारण नफ़रत बढ़ गई जिससे 66 ई. वाला यहूदी विद्रोह हुआ। [4]याद रखें कि फेलिक्स को पद से उन्होंने ही उतरवाया था! [5]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 131 पर प्रेरितों 4:6 पर नोट्स देखिए। [6]उस ''चूना फिरी दीवार'' को उसके पद से ''परमेश्वर ने मारा'' था। परन्तु, अभी भी उसका काफी प्रभाव था और सम्भवत: वह उल्लिखित ''महायाजकों'' में से एक था। बाद में उसे यहां तक ''मारा'' गया था कि वह मर गया (इस भाग में ''यरूशलेम में'' प्रेरितों 23:2, 3 पर नोट्स देखिए)। [7]प्रेरितों के काम में इश्माइल का नाम नहीं है; यह जानकारी इतिहासकार जोसेफस से मिलती है। [8]''दण्ड की आज्ञा'' वाक्यांश उस यूनानी शब्द का अनुवाद है जिसका अर्थ है ''दोषपूर्ण निर्णय'' (साइमन जे. किस्टमेकर, *न्यू टैस्टामेन्ट कमैन्ट्री: एक्सपोज़िशन ऑफ द ऐक्ट्स ऑफ द अपोस्टल्ज़*)। [9]लगता है कि जब फेस्तुस को बताया गया कि क्या हुआ था तो उसने उसका श्रेय लेना चाहा, परन्तु मैं फेस्तुस पर कम से कम दो कारणों से विश्वास करता हूं: (1) इस राज्यपाल की बातें लूका के मूल वृत्तांत के विपरीत नहीं हैं; बल्कि वे इसकी पूरक हैं। (2) फेस्तुस द्वारा बताई गई यहूदी अगुओं की बिनतियां पौलुस के साथ उनकी जगज़ाहिर घृणा से मेल खाती हैं। [10]वैस्टर्न टैक्स्ट में आयत 24 में जोड़ा गया है ''कि मुझे चाहिए कि उसे बिना किसी दलील के दण्ड देने के लिए उन्हें सौंप दूं।''

[11]उदाहरण के लिए, KJV देखिए। NASB में बाद में (पद 9) में (*charin*) का अनुवाद ''Favor'' किया गया। [12]नये अधिकारी पर असहनीय दबाव था! सुझाव दिया गया है कि उसने फेस्तुस को घूस देने की भी कोशिश की होगी। फेस्तुस के पूर्व अधिकारियों को खरीदा जा सकता था (24:26), इसलिए उन्हें लगा कि उसे भी खरीदा जा सकता है। [13]इनमें से कुछ या सभी लोग वही थे जिन्होंने पहले पौलुस की हत्या करने की शपथ खाई थी (23:12, 13)। [14]फेस्तुस क्लौदियुस लुसियास जितना (23:23) रक्षक दल उपलब्ध नहीं करवाना चाहता था। [15]अध्याय 23 का षड्यन्त्र रचने वाले मूल चालीस लोग थे; फिर उन्होंने अपनी योजना सभा को बताई थी। इस बार, यह निकम्मी साजिश सभा ने ही रची थी। [16]यदि लुसियास अभी भी यरूशलेम में कमांडर था, तो उसने फेस्तुस को दो वर्ष पहले की हत्या के षड्यन्त्र के बारे में बता दिया होगा; परन्तु इसका कोई संकेत नहीं है कि राज्यपाल को उस षड्यन्त्र की जानकारी थी। यदि उसे यह जानकारी होती, तो वह अग्रिप्पा के साथ अपनी व्यक्तिगत बातचीत में इसका उल्लेख अवश्य करता (पद 14-21)। [17]वे नये शासक की अनुभवहीनता और अपने प्रबन्ध की अच्छी शुरुआत की उसकी स्वाभाविक इच्छा का लाभ लेने की कोशिश में थे। इसकी तुलना प्रेरितों 18 में यहूदियों के गल्लियो के साथ व्यवहार से कीजिए (''प्रेरितों के काम, भाग-4'' में प्रेरितों 18:12 पर नोट्स देखिए)। [18]जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कमैन्ट्री ऑन ऐक्ट्स* में उद्धृत। [19]*बिमा* को ही ''न्याय आसन'' कहते थे जो रोमी अधिकार का चिह्न था। यह तो किले के भीतर हो सकता था, परन्तु *बिमा* सम्भवत: आंगन में ही होता था। इसकी तुलना यूहन्ना 18:28 से कीजिए। दोबारा ''प्रेरितों के काम, भाग-4'' में प्रेरितों 18:12 पर नोट्स देखिए। [20]प्रेरितों 24:1 देखिए। यदि उन्होंने तिरतुल्लुस को अपना वकील नियुक्त किया था, तो सम्भवत: उन्हें लगा कि उनके पैसे वसूल नहीं हुए!

[21]आयत 8 में पौलुस के उत्तर से हमें इसका पता चलता है। आरोपों के विवरण के लिए, इस भाग में ''और *उन्होंने समझा*'' और ''पौलुस पर मुकदमा'' पाठों में प्रेरितों 21:28 और 24:10-21 पर नोट्स देखिए। [22]इस दृश्य और 17:5-8 में तुलना पर ध्यान दीजिए। [23]यहूदियों के पास पौलुस पर लगाए आरोपों का कोई प्रमाण नहीं था, इसलिए उसके दोषी ठहरने का केवल एक ही तरीका था कि वह स्वयं अपने आपको दोषी मान लेता। पौलुस द्वारा अपने आपको ''निरपराध'' दिखा देने पर फेस्तुस को चाहिए था कि उसे तुरन्त निर्दोष घोषित कर देता। [24]यूनानी शब्द *कैसर* का अंग्रेज़ी में अनुवाद ''सीज़र'' किया जाता है। मूलत:, ''कैसर'' जूलियस सीज़र के परिवार का नाम था, परन्तु फिर रोमी शासकों को कैसर कहा जाने लगा। [25]यूनानी शब्द *सिबस्टॉस* का हिन्दी में अनुवाद ''महाराजाधिराज'' किया गया है, जो लातीनी शब्द ''अगुस्तुस'' (देखिए KJV) का यूनानी समानार्थक शब्द है। ''अगुस्तुस'' शब्द एक उपाधि थी जिसका अर्थ है ''प्रतापवान, विस्मित करने वाला।'' कुछ रोमी सम्राटों द्वारा भी यह उपाधि स्वीकार की जाती थी (देखिए लूका 2:1)। [26]यूनानी शब्द *कुरियोस* का हिन्दी में अनुवाद ''स्वामी'' किया गया है। अंग्रेज़ी में इसका अनुवाद प्रभु के लिए हुआ है। सम्राट पर लागू करने पर यह उसे ईश्वरीय अर्थ दे देता है। (याद रखें कि सम्राट को ''स्वामी'' या ''प्रभु'' रोमी लोग कहते थे, यहूदी या मसीही लोग नहीं)। कई सम्राट अपने नाम के साथ स्वामी अर्थात प्रभु लगाने से इन्कार करते थे, परन्तु वर्तमान सम्राट नीरो ने इस नाम से अपनी प्रशन्सा करवाई। बाद में, सम्राट को ''प्रभु'' न कहने के कारण बहुत से मसीहियों को शहीद कर दिया गया था। परमेश्वर की संतान के लिए तो ''एक ही प्रभु'' है (इफिसियों 4:5)। [27]यह मत भूलें कि पौलुस एक रोमी नागरिक था और उसे कुछ विशेष अधिकार मिले हुए थे। यदि रोम में यह ख़बर पहुंच जाती कि फेस्तुस ने किसी निर्दोष रोमी नागरिक को दण्ड दिया है, तो उसे उसका कठोर दण्ड मिलता। [28]अमेरिका में (और कई दूसरे देशों में), ''दोहरे जोखिम'' का कानून है, जिसके अनुसार यदि कोई व्यक्ति किसी विशेष अपराध के लिए एक बार निर्दोष ठहरता है, तो उस पर उसी अपराध के लिए दोबारा मुकदमा नहीं किया जा सकता। फेस्तुस स्पष्टत: ''*तिहरे* जोखिम'' से भी बचाने को नहीं मानता था। [29]अर्नस्ट हेयन्कन आई. हॉवर्ड मार्शल, *द ऐक्ट्स ऑफ़ द अपोस्टल्ज़,* द टिंडेल न्यू टैस्टामेन्ट कमैन्ट्रीज़, gen. ed. R.V.G. Tasker. में उद्धृत। [30]यह पौलुस के जवाब से स्पष्ट है: ''... कोई मुझे उनके [यहूदी अगुओं के] हाथ नहीं सौंप सकता ...'' (आयत 11)। यदि पौलुस को ''नहीं, धन्यवाद; मैं यरूशलेम नहीं जाऊंगा,'' कहने का विकल्प दिया गया होता, तो उसे कैसर के सामने अपील करने की आवश्यकता न होती (देखिए 28:19)।

[31]मूलत:, एक नागरिक लोगों के सामने अपील करता था। बाद में, वह अपील रोमी सीनेट के पास की जाती थी, जो लोगों का प्रतिनिधित्व करती थी। बाद में, यह अपील सम्राट के पास की जाती थी, जिसे लोगों का प्रतिनिधि माना जाता था। [32]मूल शास्त्र में, हमें इन दो लातीनी शब्दों के यूनानी समानार्थक शब्द मिलते हैं। कई बार इसका लम्बा रूप प्रयुक्त होता था: किवस रोमानस सम, प्रोवोको एड कैसरम। [33]सिनेका गल्लियो का भाई था। ''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पाठ ''प्रभु अपना वचन सदैव निभाता है'' में प्रेरितों 18:12 पर नोट्स देखिए। [34]एफ.एफ. ब्रूस, *द बुक ऑफ़ ऐक्ट्स, rev.ed.,* द न्यू इन्टरनेशनल कमैन्ट्री ऑन द न्यू टैस्टामेन्ट। 64/65 सन में, नीरो ने मसीहियों का सताव आरम्भ किया। [35]यूनानी में केवल ''सभा'' (देखिए KJV) है। इसे यहूदी सभा के साथ मत उलझाएं। यह सभा राज्यपाल का सलाहकारी बोर्ड होता था। कोई भी कार्यकारी अधिकारी हर क्षेत्र में निपुण नहीं हो सकता, इसलिए सरकार के विभिन्न विभागों में अधिकतर सलाहकारी बोर्ड (या ''कैबिनेट'') होते हैं। [36]28:19 पर ध्यान दें, जहां पौलुस ने कहा, ''मुझे कैसर की दुहाई देनी *पड़ी।*'' [37]फिलिप्पियों 1:12-17 के अनुसार, रोम के विश्वासी भाइयों में पौलुस की कैद के बारे में मिली-जुली भावनाएं थीं। कई तो स्पष्टत: उसकी बेड़ियों से परेशान हो गए थे। [38]सम्भव है कि पौलुस ने यीशु की प्रतिज्ञा की व्याख्या इस अर्थ में की कि वह रोम जाने के लिए छूट जाएगा (23:11)। पौलुस ने पहले भी आत्मा की चेतावनी का गलत अर्थ लगाया था (20:22-25); हो सकता है उसने यीशु की प्रतिज्ञा का भी अर्थ गलत लगाया होगा। [39]इतनी बार निर्दोष ठहरने के अलावा और इसलिए कि उसे छोड़ दिया जाना चाहिए, पौलुस को फेलिक्स के फलस्तीन से जाने से पहले छूट जाने की उम्मीद होगी। आम तौर पर, राज्यपाल के जाने पर क्षमा करने के उसके कार्यों में से एक किसी ऐसे कैदी को छोड़ देना होता

था जिसके विषय में उसने अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया हो (देखिए प्रेरितों 24:27)। [40]याद रखिए कि यह अग्रिप्पा का व्यक्तिगत विचार था, जिसका इस मामले से कोई लेना देना नहीं था।

[41]राज्यपाल बिना देरी के कार्य करने में विश्वास रखता था (25:17)। उसने तो तुरन्त पौलुस को यरूशलेम लौटा देना था। वैस्टर्न टैक्स्ट में प्रेरितों 28:19 में पौलुस को यह कहते दिखाया गया है, ''मुझे कैसर के सामने अपील करनी पड़ी, ... कि मैं अपने प्राण को मृत्यु से छुड़ा सकूं।'' (यह विश्वास करने का कि पौलुस ने कैसर के सामने अपील करके कोई गलती नहीं की, एक और कारण यह है कि अपने आरोपियों का सामना करने पर, वह आम तौर पर अपने द्वारा आत्मा को बोलने देता था [मरकुस 13:11]।) [42]1 कुरिन्थियों 10:13 में परीक्षा के लिए यूनानी शब्द पेयरसमॉस को वास्तव में नये नियम में दो तरह से इस्तेमाल किया गया है। इसे 1 कुरिन्थियों 10:13 में ''परीक्षा'' (temptation) के लिए और याकूब 1:2 में, ''परीक्षाओं'' (trial) के लिए इस्तेमाल किया जाता है, इन दोनों उपयोगों को संदर्भ के अनुसार तय किया जाता है। 1 कुरिन्थियों 10:13 वाली ''परीक्षा'' अर्थात बुराई करने की लालसा, हमेशा शैतान की ओर से ही आती है (याकूब 1:13)। याकूब 1:2 वाली ''परीक्षाएं'' कभी-कभी प्रभु की ओर से जांचने के लिए भी आती हैं परन्तु प्रभु हमेशा हमारे विश्वास को दृढ़ करना चाहता है, उसे नाश नहीं करना चाहता। शैतान हमें बुराई करने के लिए परीक्षा में डालता है; परमेश्वर हमारे विश्वास को बनाने के लिए हमें जांचता है। शैतान की ओर से होने वाली प्रत्येक परीक्षा से निकलने का मार्ग होता है; परमेश्वर की ओर से होने वाली प्रत्येक परीक्षा के साथ हमें दृढ़ करने का ढंग होता है। [43]एड वार्टन, *द एक्शन ऑफ द बुक ऑफ ऐक्ट्स।* [44]इसके एक उदाहरण के लिए, अय्यूब की पुस्तक के पहले 2 अध्याय देखिए। परमेश्वर हमें दृढ़ बनाने के लिए हम पर परीक्षाएं आने देता है। [45]यूसुफ का एक दिलचस्प उदाहरण है: शारीरिक वासना सम्बन्धी परीक्षा के लिए विरोध करने की सामर्थ के लिए परमेश्वर द्वारा दिया ''निकास का मार्ग'' दिलचस्प है परन्तु यूसुफ के लिए परमेश्वर का ''निकास का मार्ग'' उससे भागना था (उत्पत्ति 39:12)! [46]इस भाग को सुनने वाले मसीही लोगों द्वारा विशेष चुनौतियों का सामना करने के लिए व्यक्तिगत और व्यावहारिक बनना चाहिए। उदाहरण के लिए, हमारे इलाके में, मैं इस प्रासंगिकता का इस्तेमाल कर सकता हूं: ''यदि आप अपने विवाह से प्रसन्न न हों, तो आप की इच्छा होगी कि परमेश्वर आपको विवाह से 'निकालने का मार्ग' दिखाए जबकि आपके लिए परमेश्वर का 'निकास मार्ग' यह हो सकता है कि आप अपने जीवन साथी को समझाने में पूरा ज़ोर लगा दें!'' [47]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *वियर्सबे'स एक्सपोज़िटरी आउटलाइन्ज़ ऑन द न्यू टैस्टामेन्ट।* [48]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैन्ट्री,* vol.1.